प्राक्कथन

मिथिला उत्तर-भारत का एक प्रसिध्द जनपद है और इसका इतिहास भी महान संस्कृति से संपन्न है। रामायण महाकाव्य में इस जनपद का विशेष विवरण मिलता है। मिथिला के प्राचीन इतिहास, सभ्यता और संस्कृति की दूर-दूर तक सुकीर्ति फैली है। धर्म, विद्या और संस्कृति की श्रेष्ठता के कारण मिथिला और मिथिलावासी उज्ज्वल यश के भागी रहे हैं। धर्म, तत्वज्ञान आदि मिथिला के सान्निध्य में रह कर ही सीखा जा सकता है ऐसी प्राचीन समय में धारणा थी। मिथिला के राजे-महाराजे तथा महारानियाँ बहुत विद्वान रहे हैं। फिर इनके दरबार की प्रतिभा कितनी प्रगल्भ होगी इसकी कल्पना की जा सकती है।

प्राचीनतम् प्रमाणों से स्पष्ट होता है कि मिथिला बहुत काल तक वेद और औपनिषदिक विद्या का केन्द्र रही है। गौतम, जैमिनी और कपिल

ने क्रमश: न्याय-वैशेषिक, मीमांसा और सांख्य पर सर्वप्रथम व्याख्यान मिथिला में दिये थे। बौध्द विचारधारा के विशेष प्रसार के समय भी मिथिला ने कुमारिल और उदयन के नेतृत्व में ब्राह्मण विचारधारा (वैदिक विचारधारा) को श्रेष्ठता को स्थापित किया था। मध्य-युग में नव्यन्याय पूर्व मीमांसा और स्मृति निबन्धों का मिथिला बड़ा केन्द्र रही है। मिथिला ने तुर्कों के आक्रमण के बाद भी अपने महत्वपूर्ण परम्परित शिक्षा-भण्डार को सुरक्षित रखा।

ऐसी बहुत समृध्द` मिथिला` न जाने क्यों मुझे बहुत सालों से अपनी ओर खींचती रही है। डॉ. सुमति पोद्दारजी का` मैथिली ` उपन्यास पढने के बाद मिथिला मेरे मन में और गहराई से पैठ गयी।

सात-आठ वर्ष पहले` धर्मयुग ` पत्रिका में राधा-कृष्ण पर लिखे विद्यापति के पदों पर एक लेखक ने अपने विचार प्रस्तुत किये थे। उस वक्त जान गयी कि` मिथिला` महाकवि विद्यापति की जन्म-भूमि है। मैं मिथिला को गहराई से जानने की जैसे कोशिश करती गयी वैसे यही कहना होगा कि मैं ही विद्यापति के काव्य की ओर बरबस खींचती गयी। मैंने विद्यापति का काव्य-भण्डार पढा और मैं मिथिला के सुपुत्र महाकवि विद्यापति के बहुमुखी व्यक्तित्व एवं उनकी प्रगल्भ प्रतिभा से भी ज्ञात हो गयी।

महाकवि विद्यापति मिथिला के बहुत ही जनप्रिय कवि हो गये हैं। विद्यापति मिथिला के एक सम्पन्न ब्राह्मण - कुल में उत्पन्न हुये थे। वे धर्म-दर्शन, भूगोल, नीतिशास्त्र, इतिहास, स्मृति आदि शास्त्रों के विद्वान थे। वे संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित थे। उनका संस्कृत, अवहट्ठ तथा मैथिली भाषाओं पर समान अधिकार था। इन्होंने इन तीनों भाषाओं में रचनाएँ करके अपनी विलक्षण प्रतिभा का परिचय दिया है। उनकी सभी रचनाओं से उनके हर विषय का ज्ञान स्पष्ट हो जाता है।

मुझे इतिहास के प्रति विशेष रुचि होने के कारण` कीर्तिलता `

के कथानक ने मेरे मन में घर कर लिया। मैंने यह बात उसी वक्त पक्की की कि यदि आगे चल कर कभी मौका मिले तो `कीर्तिलता` के बारे में विशेष अध्ययन करूँ।

धीरे-धीरे समय बीतता गया। एम्.फिल्. के छात्रा के रूप में शोध-प्रबन्ध के लिए विषय तय करने का जब मौका आया तो मैंने विद्यापति की `कीर्तिलता` का ही चयन किया। `कीर्तिलता` में अभिव्यक्त समाज-दर्शन` यह विषय मैंने निश्चित किया। `कीर्तिलता` के सूक्ष्म अध्ययन के पश्चात् स्पष्ट हो गया कि विद्यापति की सूक्ष्म दृष्टि ने तत्कालीन समाज के किसी भी अंग को अनदेखा नहीं किया था। `कीर्तिलता` ऐतिहासिक वीरकाव्य है जो तत्कालीन समाज का यथार्थ दर्शन प्रस्तुत करता है।

मैथिल कोकिल विद्यापति की रचनाओं का सभी ने स्वागत किया है। विद्यापति को बहुत राजाओं का आश्रय मिला था। उन्होंने प्रत्येक आश्रयदाता पर प्रशस्ति के रूप में अपने काव्य की निर्मिती की।

`कीर्तिलता` में कीर्तिसिंह राजा का वीर-गान किया गया है। मिथिला का उध्दार कर जब कीर्तिसिंह मिथिला की गद्दी पर बैठे और शासन करने लगे तो उनके गुणों से प्रभावित होकर विद्यापति ने इस काव्य का सृजन किया। इस काव्य में तत्कालीन समाज का यथार्थ चित्रण करने में विद्यापति को पूर्ण सफलता मिली है।

यह विषय चुनने का मेरा उद्देश्य यही था कि हम तत्कालीन सामाजिक जीवन के हर अंग से परिचित हो जायें। वैसे यह कठिन काम था परन्तु कछुवे की गति से ही क्यों न हो परन्तु `कीर्तिलता` के समाज एवं हर व्यक्ति तक मैं पहुँच गयी।

इस लघुशोध प्रबन्ध के प्रथम अध्याय में विद्यापति के जीवन परिचय तथा कृतित्व का परिचय दिया है। द्वितीय अध्याय में विद्यापति कालीन

सामाजिक परिस्थिति का विवेचन किया है। इसी अध्याय के दूसरे भाग में तत्कालीन आर्थिक स्थिति एवं अर्थार्जन के स्त्रोतों को स्पष्ट किया है। तृतीय अध्याय के पहले भाग में `कीर्तिलता` में प्राप्त धार्मिक विचारों का विवेचन किया है। इसी अध्याय के दूसरे भाग में आर्थिक दृष्टि से संपन्न उच्च-वर्ग का विवेचन किया है। इसमें सुलतान इब्राहम शाह के वैभव-संपन्न राजमहल तथा वेश्याओं के भव्य और संपन्न आवासों का वर्णन किया है। तृतीय अध्याय के तीसरे भाग में सर्वसाधारण जनता का और अनेक व्यवसाय करने-वाली अनेक जातियों का विवेचन किया है। इसी में इब्राहम शाह के तुर्क सैनिकों का वर्णन भी किया है। तृतीय अध्याय के चौथे भाग में विद्यापति के पूर्ववर्ती काव्यों का प्रभाव `कीर्तिलता` पर किस प्रकार पडा है, इसका वर्णन किया है। चतुर्थ अध्याय में उपसंहार के सहारे उपर्युक्त अध्यायों के आधार पर निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

`कीर्तिलता` में धार्मिक विचार, उच्च-वर्ग तथा जनसाधारण का चित्रण और विद्यापति पर पूर्ववर्ती काव्यों का प्रभाव इन चारों का संगम, प्रस्तुत लघुशोध-प्रबन्ध है।

इस लघुशोध-प्रबन्ध में जो विचार अभिव्यक्त हुये तथा निष्कर्ष निकाले हैं उसमें कुछ त्रुटियों का होना स्वाभाविक है। इन त्रुटियों का स्वीकार करते हुये प्रस्तुत लघुशोध-प्रबन्ध आपकी सेवा में प्रस्तुत किया जा रहा है।

`कीर्तिलता` में अभिव्यक्त समाज-दर्शन` यह विषय लघुशोध-प्रबंध के लिये निश्चित करने पर मेरे मन में निम्न प्रश्न निर्माण हुये :--

(१) `कीर्तिलता` के रचयिता कवि का जीवन परिचय और कृतित्व का परिचय पा लिया जाय।

(२) `कीर्तिलता` के परिप्रेक्ष्य में विद्यापति कालीन सुस्थतया सामाजिक, राजनीतिक धार्मिक, साहित्यिक एवं आर्थिक परिस्थितियों का परिचय प्राप्त कर लिया जाय।

(३)(अ)`कीर्तिलता ` में अभिव्यक्त धार्मिक विचार कैसे होंगे ?

(ब)`कीर्तिलता ` में विद्यापति ने उच्च-वर्ग का चित्रण किस प्रकार किया है ?

(क)`कीर्तिलता ` में जनसाधारण का चित्रण विद्यापति ने किस प्रकार किया है ?

(ड)`कीर्तिलता` पर क्या पूर्ववर्ती काव्यों का प्रभाव है ? है तो किन काव्य-ग्रंथों का ?

इस दृष्टि से मेरा अध्ययन प्रारंभ हुआ ।

प्रस्तुत लघुशोध-प्रबन्ध का लेखन मेरे निर्देशक,आदरणीय प्रा.शरद कणाबरकर जो प्राचीन तथा मध्ययुगीन काव्यों के प्रेमी और अभ्यासक हैं, उन्हीं के मार्गदर्शन में यह स्वरूप ले सका है । आदरणीय कणाबरकरजी के मिले प्रोत्साहन तथा प्रेरणा के कारण मैं यह जटिल कार्य पूरा कर सकी । आपके साथ सौ.कणाबरकरजी का भी प्रोत्साहन मुझे हमेशा मिलता रहा । आप दोनों की मैं सदैव ऋणी रहूँगी ।

कवि विद्यापति तथा उनकी कृतियों और समकालीन परिस्थितियों पर प्रकाश डालने में सहायक ग्रंथों ने मेरी बहुत मदद की है । उन सभी ग्रंथ-लेखकों के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ ।

शिवाजी विश्वविद्यालय के उपग्रंथपाल डॉ.जे.बी.जाधवजी के प्रति तथा इस लघुशोध-प्रबन्ध को समय पर टंकित करने का कार्य श्री बाळकृष्ण आर.सार्वत, कोल्हापुर ने किया है उनके प्रति मैं कृतज्ञ हूँ ।

पाटील.

(कु.पद्मा रा.पाटील)

कोल्हापुर ।

दिनांक :२९:५:१९८९ ।

••